कुल पृष्ठ संख्या-32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या.............................

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) ....

....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ....

....

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [ ] अंग्रेजी [✓]

विषय ...... इतिहास ......

परीक्षा का दिन ......

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालन अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।
(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांको की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंको का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक | | | | |

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग मे लिया गया है। 163 / 2018

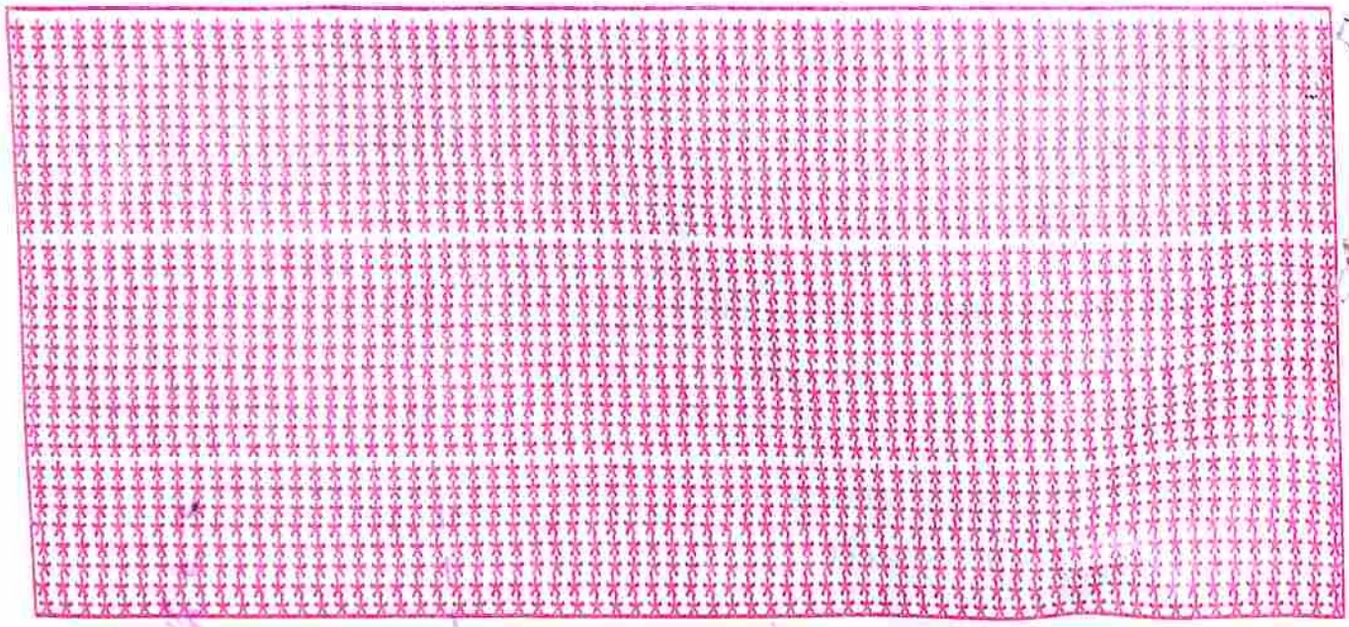

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात, जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका, वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

" खण्ड अ "

① उत्तर- 'दसराज्ञ युद्ध' 'परुष्णी' नदी के तट पर लड़ा गया था।

② उत्तर- गुप्त शासक समुद्रगुप्त को स्मिथ ने भारत का नेपोलियन कहा था।

③ उत्तर- चतुर्थ बौद्ध संगीती का आयोजन "कनिष्क" के शासन-काल में हुआ।

④ उत्तर- शक शासक "रुद्रदमन" ने सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार कराया।

⑤ उत्तर " शून्यवाद" के प्रवर्तक "नागार्जुन" थे।

⑥ उत्तर- मेनाण्डर और बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच वार्तालाप 'मिलिन्दपन्हो' नामक पुस्तक में मिलता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(7)
उत्तर- पृथ्वीराज चौहान को "रायपिथौरा" नाम से जाना जाता है।

(8)
उत्तर- मेवाड के शासक रावल "रतनसिंह" ने 1303 में अलाउद्दीन खिलजी का सामना किया।

(9)
उत्तर- राणा कुंभा संगीत के महान ज्ञाता थे इसीलिए उन्हे "अभिनव भारताचार्य" कहा जाता है।

(10)
उत्तर- मालवा के शासक महमूद खिलजी पर विजय की स्मृति में कुंभा ने विजय स्तम्भ का निर्माण करवाया।

"1303 ई"

(11)
उत्तर- जातक ग्रंथों में भगवान बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाओं का संकलन है, जातक ग्रंथों में कथाओं की संख्या लगभग पाँच सौ है।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(12)
उत्तर-

	शासक		राजवंश
(i)	बिन्दुसार	-	(घ) मौर्य
(ii)	राजेन्द्र प्रथम	-	(ग) चोल
(iii)	कृष्णदेव राय	-	(ख) तुलुव
(iv)	हर्षवर्द्धन	-	(क) पुष्यभूति

(13)
उत्तर- सिंधु सरस्वती सभ्यता की दो विशेषताएँ -
(i) जल निकास प्रणाली - इस प्रणाली में गंदे जल को समुचित तरीके से बाहर नाले तक पहुंचाया जाता है।
(ii) सड़क निर्माण - नगर नियोजन में सड़के चौड़ी होती थी, जो मुख्य सड़कों से मिलती थी।

(14)
उत्तर- 'शशिगुप्त' व 'आंभी' दो भारतीय राजा थे जिन्होंने सिकंदर का साथ दिया।

(15)
उत्तर- यदि तराईन के द्वितीय युद्ध में मैं होता तो निम्न त्रुटियों से बचने का प्रयास करता।
(i) संधि-वार्ता के झांसे में नहीं आता।
(ii) मुहम्मद गौरी के आक्रमण के प्रबल उत्तर हेतु सक्रिय रहता।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(16)
उत्तर- लॉर्ड डलहौजी एक महत्वकांक्षी गवर्नर जनरल था। जिसने ब्रिटिश शासन कौ विस्तार करने के लिए युद्ध के अतिरिक्त गोद निषेध", भ्रष्टाचार, कुशासन, संधि भंग आदि आधारों पर कई राज्यों को साम्राज्य में मिलाया, यही सिद्धांत "व्यपगत सिद्धांत" कहलाया।

(17)
उत्तर- ब्रह्म समाज की स्थापना "राजाराममोहन राय" ने 20 अगस्त 1828 में की।

(18)
उत्तर- राजस्थान सेवा संघ की स्थापना 1919 में "वर्धा" में विजयसिंह पथिक ने की।

"2405 स"

(19)
उत्तर- प्राचीन भारत में व्यक्ति के जीवन को पूर्णता की ओर ले जाने के लिए उसकी आयु को एक "आदर्श परिधि" में रखा गया।
व्यक्ति की आयु को चार आश्रमों में बाँटा गया।
(i) ब्रह्मचर्याश्रम - (0 - 25 वर्ष तक की आयु)
इस आयु में व्यक्ति विद्याध्ययन करने के साथ-संस्कार को ग्रहण करता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ii) गृहस्थाश्रम - (26-50 वर्ष) - इस आयु में व्यक्ति अर्थ अथवा धन कमाता है (धर्मरत रहकर)।
(iii) वानप्रस्थाश्रम - (51-75 वर्ष) - इस आयु में व्यक्ति धन का प्रयोग समाज कल्याण में करता है।
(iv) संन्यासआश्रम - (76-100 वर्ष) - व्यक्ति अपने जीवन के अंतिम दिनों में ईश्वर की उपासना में लीन रहता है।

(20)
उत्तर- चोल स्थानीय स्वशासन की विशेषताएँ -
(i) चोल राजवंश में स्थानीय शासन को विभिन्न स्तरों में बाँटा ताकि ठोसागत विकास संभव हो सके।

(ii) चोल स्थानीय स्वशासन में केन्द्रीय हस्तक्षेप न के बराबर था।
(iii) चोलो की स्थानीय व्यवस्था में ग्रामीण व प्रांतीय स्तरों पर निजि न्यायालय थे, जो स्थानीय लोगों की समस्याओं को सुलझाते थे।
(iv) स्थानीय स्तरों के क्षेत्रो का आंतरिक स्वायत्तता थी, ताकि केन्द्र पर निर्भर न रहना पड़े।

(21)
उत्तर- मूर्तिकला की गांधार शैली की विशेषताएँ निम्न थी-
(i) गांधार शैली की विषयवस्तु तो भारतीय थी परन्तु निर्माता यूनानी थे।
(ii) गांधार शैली की मूर्तियों में यूनानी शृंगार व अलंकार

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

की प्रधानता थी।

(iii) ये मूर्तियाँ चित्रित स्लेटी रंग की बनाई जाती थी, बाद में चूने प्लास्टर का भी प्रयोग होने लगा था।

(iv) खींची हुई आंखे, भारी ओष्ठ, मुंछ घुंघराले बाल आदि इनकी मुख्य विशेषताएँ थी।

(22)

उत्तर- महाराणा प्रताप की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित थी-

(i) निहत्थे पर वार नही करना- महाराणा प्रताप युद्ध भूमि में निहत्थे हुए सैनिक पर वार नही करते थे।

(ii) धार्मिक सहिष्णुता- महाराणा प्रताप सभी धर्मों का सम्मान करते थे, उनका सेनापति, हकीम खाँ सूरी जो एक मुस्लिम था।

(iii) स्त्री की गरिमा का सम्मान- महाराणा प्रताप स्त्री गरिमा का हृदयगत सम्मान करते थे, अब्दुर्रहीम खानखानान मुस्लिम बेगमों को सम्मान भेज दिया था।

(iv) स्वातंत्र्य प्रेमी- महाराणा प्रताप स्वातंत्र्य प्रेमी थे उन्होंने न ही मुगलों की अधीनता स्वीकार की और न ही अकबर के राजदरबार में सम्मिलित हुए।

(23)

उत्तर- प्लासी के युद्ध के कारण निम्नलिखित थे-

(i) नवाब के सिंहासनारोहण पर कोई प्रतिक्रिया नही- नवाब

क द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सिराजुद्दौला के सिंहासनारोहण पर अंग्रेजो द्वारा नवाब को कोई भेंट या उपहार नही दिये।

(ii) किलेबंदी के आदेश की अवमानना - सिराजुद्दौला ने फ्रांसिसियों व अंग्रेजो का आदेश दिया कि वे बास्तियों की किलेबन्दी न करें, जिसकी उन्होंने अवमानना कर नवाब को नाराज कर दिया।

(iii) दस्तक पत्रो का दुरुपयोग - मुगल सम्राट फर्रुखसियर द्वारा प्राप्त दस्तक-पत्रों का दुरुपयोग किया जिससे नवाब के राजकोष को हानि हो रही थी।

(iv) राजनीतिक कारण - घसीटी बेगम, रायदुर्लभ, मीर-जाफर जो कि तीनो नवाब के विद्रोही या विरुद्ध थे, अंग्रेजो ने इन्हे अपनी ओर मिला लिया और प्लासी के युद्ध को अवश्यंभावी कर दिया।

(24) उत्तर- 1857 की क्रांति के असफलता के कारण -

(i) योग्य नेतृत्व का अभाव - 1857 की क्रांति का कोई सर्वमान्य नेतृत्वकर्ता नहीं था, तथा अलग-अलग स्थानो पर होने वाले विद्रोहों के नेतृत्व करने वालों का नेतृत्व व्यापक स्तर का व योग्य नेतृत्व नहीं था।

(ii) आपसी समन्वय का अभाव - झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नानासाहब, बहादुर शाह जफर, हजरत महल, कुशालसिंह आदि में समन्वय का अभाव था, व आपसी संदेह का भाव भरा हुआ था।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) भारतीय नरेशों का असहयोग - भारतीय नरेश 1857 की क्रांति के समय क्रांतिकारियों के लिए तटस्थ व अंग्रेजों की सहायता के पक्ष में थे। लॉर्ड केनिंग के अनुसार "भारतीय नरेश तूफान में बाँध की तरह थे"।

(iv) समुचित आदर्शों का अभाव -
वी.डी. सावरकर के अनुसार क्रांति के असफल होने का मुख्य कारण "आदर्शों का अभाव था" यदि भारतीयों के सामने कोई समुचित आदर्श या लक्ष्य रखा होता तो क्रांति का अंत भी उतना ही अच्छा होता जितना आरम्भ"।

(25)
उत्तर- राजा राममोहन राय के धार्मिक व राजनीतिक विचार जो आज भी प्रासंगिक हैं -

धार्मिक विचार - राजा राममोहन राय आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा पर महत्त्व देते थे, उनका मानना था कि वेद भी तर्कशास्त्र पर आधारित होने चाहिए, जो तर्क-शास्त्र पर खरा न उतरें उसे त्याग देना चाहिए।
वर्तमान समय में राजाराममोहन राय के ये विचार आज भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि अंधविश्वास, व बढ़ते बाह्य आडंबरों के प्रभाव की रोकथामों का उपाय ये विचार ही हैं।

राजनीतिक विचार - राजा राममोहन राय ने व्यक्ति को राजनीतिक क्षेत्र में अवगत कराया कि उसे (व्यक्ति को) अपने अधिकारों व कर्तव्यों का अभिज्ञान होना चाहिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

राजा राममोहनराय द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज ने व्यक्तियों को राजनीति में दीक्षित किया कि "आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा का समाज हित में समुचित प्रयोग करना चाहिए।

आदि विचार आज भी प्रासंगिक है।

(26) उत्तर- बिजौलिया के जागीरदार किसानों से विभिन्न तरह की लाग-बाग, लागते, कर वसुल किया करते थे जिससे उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो चुकी थी।
दयनीय स्थिति को देखते हुए 1913 में साधु सीताराम दास ने बिजौलिया के किसानों का नेतृत्व किया।
साधु सीताराम दास 1915 में चित्तौड़ में विजयसिंह पथिक से मिले वहाँ इन्होंने पथिक जी को स्थिति की कथा सुनाई और पथिकजी ने नेतृत्व स्वीकार किया।
बिजौलिया आंदोलन का नेतृत्व अब विजयसिंह पथिक ने संभाल लिया इन्होंने "प्रताप" नामक समाचार पत्र में जागीरदारों की अत्याचारिता व्यक्त की।
1920 में 'राजस्थान केसरी' में इसे व्यापक स्तर तक पहुँचाया।
1922 में पथिकजी के प्रयासों से किसानो व जागीरदारों में समझौता हुआ व आंदोलन अंतत: समाप्त हुआ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(27)

उत्तर- भीलों के सामाजिक व नैतिक उत्थान के लिए गोविन्द गुरु ने कई महत्वपूर्ण कार्य संपादित किए। "सम्प सभा" की स्थापना कर भीलो में सर्वप्रथम जागृति लाने का प्रयास किया।

गोविन्द द्वारा भीलो को दी गई शिक्षाएँ -

(i) भीलो को मद्यपान व कुकृत्यों से दूर रहना चाहिए।

(ii) भीलो को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए व अपने बच्चों को भी शिक्षित करे।

(iii) ईश्वर में आस्था व मानवीय मूल्यों में विश्वास कर मानव की गरिमा समझनी चाहिए।

(iv) गोविन्द गुरु ने भीलो को राजनीतिक जागृति की ओर प्रेरित किया, उनकी शिक्षाओं से भील समाज का चहुंमुखी विकास होने लगा।

गोविन्द गुरु ने भीलो को अपनी आत्मिक उत्थान के लिए कर्तव्यो की ओर अगसर किया। ताकि समाज में व्यक्ति प्रगति कर सकें।

(28)

उत्तर- "गुप्तकाल" प्राचीन भारत का स्वर्णकाल था" कथन सर्वथा उचित है।

जिसके निम्न कारण है -

(i) महान सम्राटो का काल - गुप्तकाल में कई वीर, साहसी, धर्म, कला व विद्या के संरक्षक, महान विजेता, प्रजावत्सल शासक हुए है जिनमें एक योग्य

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

शासक व सेनापति के सभी गुण समाहित थे।

(ii) कला की उन्नति का युग -
गुप्तकाल में वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, स्थापत्य कला आदि का अभूतपूर्व विकास हुआ।
कई स्तूपों, विहारों, मठों, चैत्यों, आदि का भव्य निर्माण किया गया।
मूर्तिकला में कई भव्य, सुंदर मूर्तियों का निर्माण गुप्तकाल में ही हुआ।
चित्रकला में मध्यप्रदेश में ग्वालियर के बाघ के गुहा मंदिरों में अत्यन्त रमणीय चित्रकला की गई।
अजन्ता व एलोरा की गुफाओं का निर्माण भी इसी काल में हुआ।

(iii) महान विद्वानों, कवियों साहित्यकारों का युग -
गुप्तकाल में आर्यभट्ट, हरिषेण, ब्रह्मगुप्त, शूद्रक, ईश्वरकृष्ण, सुबन्धु, विशाखदत्त, जयसेन आदि कई विद्वान, कवि, साहित्यकार, नाटककार हुए जिससे गुप्तकाल चरमोत्कर्ष पर रहा।

(iv) गणित, ज्योतिष, खगोल शास्त्र में उन्नति -
गुप्तकाल में गणित में आर्यभट्ट ने दशमलव पद्धति, त्रिभुज, चतुर्भुज, पाई का मान 3.1416 तक दिया।
ब्रह्मगुप्त ने ज्योतिष शास्त्र में ब्रह्मगुप्त सिद्धांत, व ब्रह्मस्फुट सिद्धांत, खंडखाद्य ग्रंथ लिखे।
खगोल शास्त्र में आर्यभट्ट ने पृथ्वी की धुरी पर घूमना, गति का सिद्धांत दिया। भास्कराचार्य की महान

BSEB-164/2018

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

गणितज्ञ थे जिन्होंने ~~सि~~सिद्धांत सिरोमणि, लीलावती ग्रंथ लिखे।

(v) गुप्तकाल में आर्थिक समृद्धि - गुप्तकाल में व्यापार-वाणिज्य, आयात-निर्यात में भी उन्नति हुई।

(vi) गुप्तकाल में शासकों ने केन्द्रीकृत व्यवस्था स्थापित की व भारत को पूर्णरूपेण ~~भौमि~~ भौगोलिक इकाई के रूप में जाना जानेलगा।

कई क्षेत्रों में भारत में गुप्तकाल के समय अभूतपूर्व उन्नति हुई, भारत की समृद्धि, सामाज्य, सजगता, जागृति, रचनाएँ, निर्माण भी हुए जो ये सिद्ध करते है कि "गुप्तकाल" प्राचीन भारत का स्वर्णकाल था"।

(29) उत्तर- भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारण निम्नलिखित थे-

(i) सामाजिक आंदोलनों का प्रभाव - भारत में राष्ट्रवाद के कारणो में मुख्य प्रभाव सामाजिक आंदोलनों का रहा। सामाजिक आंदोलनो ने भारतीय समाज में व्याप्त रूढियों, आडंबरों, कुप्रथाओं को उजागर किया। और भारतीयों को राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक क्षेत्रों में जागृत ~~कर~~ राष्ट्रवाद का मार्ग प्रशस्त किया।

(ii) विभिन्न संस्थाओंका प्रभाव - आत्मीय सभा, ब्रह्म

समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन आदि संस्थाओं ने कई कई समाज सुधार के कार्य किये।
उन्होंने भारतीयों को उनकी गौरवशाली परम्परा, को उजागर कर ~~गौरव~~ गौरवान्वित किया तथा उन्हें राष्ट्रीय धारा से जोड़ने का प्रयास किया।

(iii) समाचार पत्रों का योगदान - भारत में समाचार पत्रो ने भारतीयों के मानस में राष्ट्रवाद की भावना को जागृत करने का सराहनीय कार्य किया।
जिनमें मुख्य है - प्रताप, राजस्थान केसरी, हरिजन, नवजीवन, युगवाणी, हंस, केसरी, मराठा आदि पत्रिकाओं ने भी राष्ट्रवादी भावनाओं का जगाया।

(iv) अंग्रेजों की शोषणकारी आर्थिक नीति - अंग्रेजों की दोषपूर्ण शासन व्यवस्था, कर-प्रणाली, आर्थिक नीतियों के कारण भारतीय लोग असंतुष्ट थे।
अंग्रेजो ने भारतीय किसानों पर कठोर भू-राजस्व, लाग-बाग लगाकर भारतीयों को असंतुष्ट किया।

(v) अंग्रेजों की जातीयभेद की नीति - भारतीयों को अंग्रेज घृणा की दृष्टि से देखते थे। अंग्रेजो द्वारा संचालित होटलों, कार्यक्रमों में भारतीय प्रवेश वर्जित था।
रेलगाड़ी की प्रथम श्रेणी में सफर करना भी वर्जित था।
इन कारणो ने भारतीयों में असंतोष की भावना जगाई।

(vi) राष्ट्रीय नेताओं, समाजसुधारकों, पाश्चात्य लेखकों,

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले विप्लवो, विद्रोहों के कारण भी भारतीय लोग प्रेरित हुए।
तथा भारत में राष्ट्रवाद महामारी की तरह संपूर्ण भारत में फैला।

" समाप्त "

BSEB 164/2018

Sl.No. :

नामांक Roll No.

SS–13–Hist.

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2018

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2018

HISTORY

इतिहास

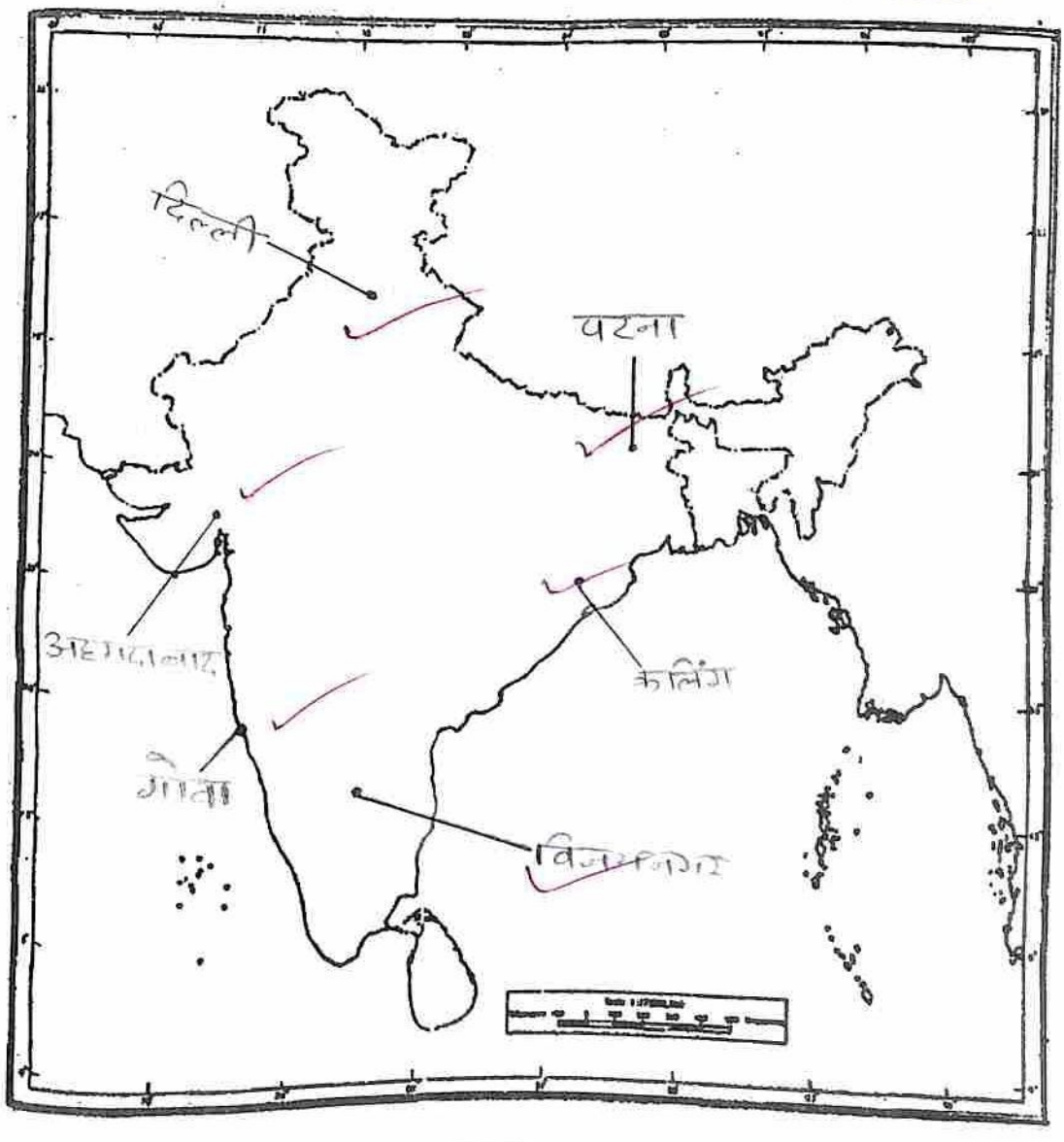

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-16/2018